उज्ज्वल भारत व राजस्थान के संदर्भ में

अर्थशास्त्र

एक नजर में ...

TO THE POINT

हस्तलिखित नोट्स

संगणक व जूनियर अकाउण्टेन्ट

RAS Pre.	कॉलेज व्याख्याता	स्कूल व्याख्याता
NET/SET	ASO/SO	अन्वेषक

एवं अन्य सभी प्रतियोगी परीक्षाओं में समान रूप से उपयोगी

लेखक

मनीष आर. राजपुरोहित

भवानी सिंह राजपुरोहित

सलाहकार

एन. एम. शर्मा

निदेशक सिखवाल पब्लिकेशन

(SIKHWAL ONLINE HUB)

Fix Price

₹ 210/—

प्रकाशक

एन.एम. शर्मा द्वारा संचालित (TM)

सिखवाल पब्लिकेशन®

रामनगर कॉलोनी, जयपुर रोड़,

मालपुरा, जिला-टोंक, राज.

मो. - 9252033638, 9667293479

© सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन सुरक्षित

ब्राँच

एन.एम. शर्मा द्वारा संचालित (TM)

सिखवाल पब्लिकेशन®

प्लॉट नं. 39-40-41

गंगाराम नगर, गोपालपुरा बाईपास,

जयपुर (राज.)

मो.:- 9660452800

फोन :- 0141-2763975

© सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन सुरक्षित

प्रकाशक:–

H.O.: सिखवाल पब्लिकेशन®
रामनगर कॉलोनी, जयपुर रोड़,
मालपुरा, जिला टोंक (राजस्थान)
मो. : 9252033638, 9660452800

Branch: सिखवाल पब्लिकेशन®
प्लॉट नं. 39, 40, 41
गंगाराम नगर, गोपालपुरा बाईपास,
जयपुर (राज.)
मो.:- 9252033638
फोन :- 0141-2763975

© सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

नवीन संस्करण

Book Code : 194 N

लेज़र टाईपिंग एवं सैटिंग
सिखवाल ग्राफिक्स
अभिजीत जोशी

प्रतियोगी परीक्षार्थियों के लिए खुश खबरी, अब प्रतियोगी परीक्षाओं की सभी पुस्तकें घर बैठे आसानी से उचित मूल्य पर प्राप्त कर सकते हैं।
Login Website :
www.shringistore.com
Contact No. : 9783404036,
6350057416

प्रकाशक तथा संपादक की पूर्वानुमति के बिना इस पुस्तक को मुद्रित करना अथवा कराना तथा इस पुस्तक की फोटोस्टेट, इलेक्ट्रोस्टेट, मशीनी, टंकण अथवा किसी भी विधि से पुनः प्रयोग द्वारा उसका संग्रहण, प्रसारण एवं वितरण पूर्णतः वर्जित है।

इस पुस्तक में दी गई सुचनाएँ यद्यपि विश्वसनीय स्त्रोतों से ली गई है। फिर भी पुस्तक का कम्पोजिंग कार्य कम्प्यूटर द्वारा करवाया गया है। पुस्तक के लेखन व प्रकाशन कार्य में लेखक व प्रकाशक द्वारा पूर्ण सावधानी बरतने के बावजूद भी कुछ गलतियाँ रह जाना सम्भव है। जिसके लिए न तो सिखवाल पब्लिकेशन तथा न ही इसके लेखक, सम्पादक को किसी भी गलती के लिए जिम्मेदार नहीं ठहराया जा सकता है। किसी भी परिवाद के लिए न्याय क्षेत्र मालपुरा, जिला-टोंक होगा।

पढेगा पूरा राजस्थान अब घर बैठे सिखवाल ऑनलाइन हब के माध्यम से नहीं रहेगा कोई शिक्षा से वंचित। Helpline No.: 7878918723

राज. में अपने विषय के विशेषज्ञ द्वारा YouTube पर फ्री क्लासेज जो विद्यार्थी के लिए रामबाण साबित होगी अभी सबसक्राइव करे

Youtube **Download** **App**

Note:-सभी कोर्स की वैधता 1 वर्ष या परीक्षा तिथि तक सिखवाल का सपना कोई नहीं रहेगा अब शिक्षा से वंचित कोर्स मात्र 499 रु.

अनुक्रमणिका

क्र.	अध्याय विवरण	पृष्ठ संख्या
	अर्थशास्त्र (Economics)	**5-*****
1.	माँग की अवधारणा (Concept of Demand)	**5-16**
2.	माँग की कीमत लोच (Price Elasticity of Demand)	**17-27**
3.	पूर्ति की अवधारणा (Concept of Supply)	**28-34**
4.	माँग का पूर्वानुमान (Demand Forecasting)	**35-40**
5.	बाजार (Market)	**41-61**
6.	राष्ट्रीय आय (National Income)	**62-78**
7.	राज्य आय (State Income)	**79-86**
8.	मुद्रा एवं बैंकिंग (Money and Banking)	**87-119**
9.	मुद्रास्फीति (Inflation)	**120-125**
10.	वित्तीय समावेशन (Financial Inclusion)	**126-130**
11.	भारत में आर्थिक विकास एवं नियोजन (Economic & Growth and Planning)	**131-146**
12.	मानव विकास सूचकांक (Human Development Index)	**147-152**
13.	लोक वित्त (Pulic Finance)	**153-155**
14.	राजस्थान में कृषि (Agriculture in Rajasthan)	**156-190**
15.	राजस्थान में मुख्य उद्योग व औद्योगिक विकास (Main Industries and Industrial Development in Rajasthan)	**191-223**
16.	राजस्थान में पशुधन (Live Stock in Rajasthan)	**224-253**
17.	गरीबी एवं बेरोजगारी (Poverty and Unemployment)	**254-273**
18.	राजस्थान में आधारभूत ढ़ाँचा (ऊर्जा, परिवहन, पर्यटन) (Infrastructure in Rajasthan)	**274-320**

अध्याय

01 माँग की अवधारणा (Concept of Demand)

★ माँग की अवधारणा में स्थान, समय व कीमत तीनों आते हैं।

★ **परिभाषा :–** किसी उपभोक्ता या किसी व्यक्ति विशेष के द्वारा एक निश्चित समय में एक निश्चित कीमत पर माँगी जाने वाली मात्रा, माँग कहलाती है।

- **वस्तु की माँग :–** वस्तु की कीमत, उपभोक्ता की आय, उपभोक्ता की रुचि एवं आदतों पर निर्भर करती है।
- **प्रो. बेन्हम के अनुसार,** "किसी वस्तु की दी गई कीमत पर वस्तु की माँग वस्तु की वह मात्रा है जो उस कीमत पर एक निश्चित समय में खरीदी जाती है।"
- **प्रो. मेयर्स के अनुसार,** "किसी वस्तु की माँग उन मात्राओं की तालिका होती है जिन्हें उपभोक्ता किसी समय विशेष पर सभी सम्भावित कीमतों पर खरीदने को तत्पर होता है।"

विद्यार्थी ध्यान दे– माँग घट भी सकती है और बढ़ भी सकती है।

माँग के तत्व

★ वस्तु विशेष को क्रय करने की इच्छा होनी चाहिए।

★ वस्तु को क्रय करने के प्रर्याप्त साधन होने चाहिए, **जैसे**– मुद्रा।

★ वस्तु को खरीदने के लिए मुद्रा खर्च की तत्परता होनी चाहिए।

(इच्छा, साधन, तत्परता)

माँग के प्रकार

1. **कीमत माँग** – वस्तु विशेष की कीमतों में परिवर्तन के कारण माँगी जाने वाली मात्रा में जो परिवर्तन होता है वह कीमत माँग कहलाती है, वास्तविक माँग होती है।

२. **आय माँग** – उपभोक्ता की आय में परिवर्तन के कारण माँगी जाने वाली मात्रा में जो परिवर्तन होता है, आय माँग कहलाती है।

३. **स्थानापन्न माँग** – एक वस्तु की कीमत में परिवर्तन के कारण दूसरी वस्तु की माँग में जो परिवर्तन होगा, स्थानापन्न माँग कहलाती है।

माँग की विशेषताएँ

★ माँग एक निश्चित समय में, निश्चित कीमत पर माँगी जाने वाली मात्रा होती है।

★ समय विशेष पर प्रति इकाई कीमत का सम्बन्ध माँग से होता है।

★ उपभोक्ता की माँग, कीमत के साथ–साथ अन्य घटकों से भी प्रभावित होती है, **जैसे**– उपभोक्ता की आय, फैशन, रुचि, रीति–रिवाज, स्थानापन्न वस्तुओं की कीमतें।

★ वस्तु की कीमत व मात्रा में प्रतिलोम (विपरीत) सम्बन्ध को बताती है।

माँग का नियम का गणितीय फलन

$X = F(P_x, Y, Y_d, T, P_n, E)$

X = X वस्तु की माँग की मात्रा
P_x = वस्तु की कीमत
Y = उपभोक्ताओं की औसत आमदनी
Y_d = परिवारों मे आमदनी का वितरण
T = उपभोक्ताओं की रुचि–अरुचि
Pn = अन्य संबंधित वस्तुओं की कीमतें
P = जनसंख्या का आकार
E = भावी कीमतों की सम्भावनाएँ।
F = फलन के सूचक है।

★ इसका अर्थ यह है कि एक वस्तु की माँग की मात्रा कई तत्वों पर निर्भर करती हैं लेकिन माँग के नियम में केवल उस वस्तु की कीमत में परिवर्तन का प्रभाव ही उस वस्तु की माँग की मात्रा पर देखा जाता है।

★ **व्यक्तिगत माँग (Individual Demand)** – व्यक्तिगत माँग से आशय किसी वस्तु विशेष की अलग–अलग कीमतों पर माँगी जाने वाली अलग–अलग मात्रा से है।

★ **बाजार माँग (Market Demand)** – किसी दी हुई कीमत पर सभी उपभोक्ताओं द्वारा माँगी जाने वाली वस्तुओं की मात्राओं का योग बाजार माँग कहलाता है।

अध्याय

03

पूर्ति की अवधारणा (Concept of Supply)

★ माँग की अवधारणा को उपभोक्ता आधार कहा जाता है जबकि पूर्ति की अवधारणा को विक्रेता आधार कहा जाता है।

★ पूर्ति व स्टॉक में अन्तर होता है।

★ स्टॉक का अर्थ उत्पादक के द्वारा उत्पादित की गई वस्तु की कुल मात्रा होती है जबकि पूर्ति स्टॉक का भाग होता है जो कि एक कीमत विशेष पर उत्पादक बाजार में विक्रय करने हेतु उपलब्ध करवाता है।

★ **पूर्ति की अवधारणा** –

↳ गुणात्मक अवधारणा / दिशात्मक अवधारणा है अर्थात् किसी वस्तु विशेष की निश्चित समय / समयावधि के दौरान किसी कीमत विशेष पर विक्रय करने हेतु तैयार पूर्ति कहलाती है।

↳ वस्तु विशेष की अधिक कीमत पर उत्पादक को अधिक लाभ कमाने के उद्देश्य पर पूर्ति को बढ़ाया जायेगा, जबकि कम कीमत पर वस्तु विशेष की पूर्ति को कम किया जायेगा। अर्थात् वस्तु की मात्रा व कीमत के बीच धनात्मक या प्रत्यक्ष संबंध होगा।

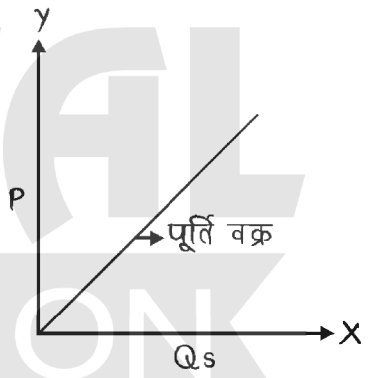

↳ वस्तु की कीमत व की जाने वाली पूर्ति मात्रा के बीच धनात्मक सम्बंध होता है।

↳ पूर्ति वक्र धनात्मक ढाल बनायेगा।

↳ पूर्ति वक्र नीचे बायें से ऊपर दायीं ओर (ऊर्ध्वगामी) होगा।

★ **लिप्से के अनुसार**, "पूर्ति एक प्रवाह है जिसे प्रति समय इकाई के रूप में व्यक्त किया जाता है।"

SIKHWAL PUBLICATION

★ **मेयर्स के अनुसार,** "पूर्ति किसी वस्तु की मात्राओं की वह तालिका है जो बिक्री हेतु विभिन्न मूल्यों पर किसी निश्चित समय अवधि में प्रस्तावित की जाती है।"

★ **बेन्हम के अनुसार,** "पूर्ति का तात्पर्य वस्तु की उस मात्रा में लगाया जाता है जो प्रति इकाई में बिक्री के लिए उपलब्ध है।"

★ पूर्ति से आशय विक्रेता द्वारा एक निश्चित कीमत पर निश्चित समय में जो विक्रय के लिए उपलब्ध करवाई गई मात्रा से होता है।

★ **पूर्ति को प्रभावित करने वाले घटक –**

1. **वस्तु की कीमतें –**
   - वस्तु की कीमत, वस्तु की पूर्ति को प्रभावित करने वाला सबसे महत्वपूर्ण तत्व माना जाता है।
   - जब वस्तु की कीमत बढ़ती है तो उसकी पूर्ति भी बढ़ जायेगी जिससे उत्पादक को अधिकतम लाभ होगा।
   - जब वस्तु की कीमत में कमी होती है तो उसकी पूर्ति भी घट जायेगी और उत्पादक को लाभ भी कम होगा।

२. **उत्पादन के साधनों की कीमतें –**
   - भूमि, पूँजी, श्रम आदि की कीमतों में वृद्धि होने पर उत्पादित उत्पाद अधिक लागत पर बनेगा जिससे उसकी पूर्ति कम होगी।
   - यदि उत्पादन के साधनों की कीमतों में कमी होती है और उत्पाद कम लागत पर तैयार होता है तो उसकी पूर्ति में वृद्धि होगी।

3. **तकनीकी / प्रौद्योगिकी परिवर्तन** – तकनीकी में सुधार होने पर उत्पादन कम समय में कम लागत पर अच्छी गुणवत्ता के साथ तैयार होगा जिससे पूर्ति में वृद्धि होगी।

4. **उत्पादन के आगतों की गुणवत्ता (कच्चा माल)** – अच्छी गुणवत्ता वाले कच्चे माल से अंतिम उत्पाद भी गुणवत्तापूर्वक होगा, जिससे उत्पादन में वृद्धि होगी।
   - विशेषकर कृषिगत उत्पादनों में अच्छी किस्म के हाइब्रिड बीजों के उपयोग से पैदावार में अत्यधिक वृद्धि होती है, जिससे उसकी पूर्ति भी बढ़ जाती है।
   - इसके विपरीत दशा में बाजार में उस वस्तु की पूर्ति घटेगी।

★ **<u>अल्पाधिकार मे कीमत निर्धारण</u>** – यदि एक फर्म के द्वारा कीमतों में कमी की जाती है तो दूसरी फर्म भी कीमतों में कमी करेगी व किसी को भी अधिकतम लाभ नहीं होगा और इसके विपरीत यदि कोई फर्म कीमत को बढ़ाकर लाभ कमाना चाहती

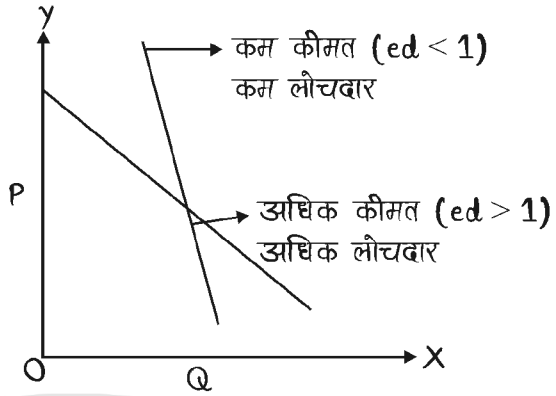

है तो क्रेता दूसरी फर्मों के पास चले जायेंगे इसलिए इस प्रतियोगिता में एक कीमत युद्ध देखने को मिलता है। इसमें सभी फर्में एक दूसरे पर निगरानी भी रखती हैं अर्थात् कीमतों को स्थिर रखना होगा। इस प्रतियोगिता में कीमतों के प्रति अनिश्चितता का वातावरण बना रहता है, जिसे <u>विकुंचित माँग वक्र</u> (यह नाम – पॉल एम स्वीजी ने दिया) कहा जाता है।

★ मूल्य निर्धारण **तीन स्थितियों** में किया जाता है–

1. पूर्ण गठबंधन के अन्तर्गत
२. अपूर्ण गठबंधन के अन्तर्गत
3. स्वतंत्र मूल्य निर्धारण

महत्वपूर्ण तथ्य

★ एकाधिकार में पूर्ति–वक्र की अनुपस्थिति अथवा पूर्ति वक्र को परिभाषित नहीं किया जा सकता है।

★ दीर्घकालीन लागत वक्र को **"<u>योजना वक्र</u>"** कहा जाता है।

★ पूर्ण प्रतियोगिता में फर्म का माँग वक्र – क्षैतिज (समान्तर) होता है।

★ दीर्घकाल में नयी फर्मों के प्रवेश के कारण एक फर्म सामान्य लाभ ही कमा सकती है। लेकिन यदि प्रवेश अवरुद्ध हो तो चालू फर्में असामान्य लाभ भी कमा सकती है।

<u>विद्यार्थी ध्यान दे</u>– अगर फर्में राजनीतिक प्रभाव का उपयोग करके विशेषाधिकार प्राप्त कर लेती हैं तो इन दशाओं में भी एक फर्म दीर्घकाल में असामान्य लाभ कमा सकती हैं।

- एक वस्तु की माँग एवं उसकी कीमत के बीच ऋणात्मक सम्बंध होता है।
- एक वस्तु का बाजार पूर्ति वक्र का धनात्मक ढाल होता है।
- एक वस्तु का बाजार माँग वक्र का ऋणात्मक ढाल होता है।
- **कॉर्नोट मॉडल** – अल्पाधिकारी मॉडल जिसमें व्यवसायी यह मानता है कि उसके प्रतिद्वंदी का उत्पादन स्थिर है तथा वह तय करता है कि कितना किया जाये।
- पूर्ण प्रतियोगिता के अन्तर्गत एक फर्म के माँग वक्र का आकार पूर्णतया लोचदार $ed = \infty$ होता है।
- **द्विपक्षीय एकाधिकार** – जब किसी वस्तु का एक ही विक्रेता (आपूर्तिकर्ता) एवं एक ही क्रेता हो तो द्विपक्षीय एकाधिकार कहलाता है।

	पूर्ण प्रतियोगिता	एकाधिकार	एकाधिरात्मक	अल्पाधिकार
फर्मों की संख्या	बहुत अधिक	एक	अधिक	कुछ (2–10)
वस्तुओं की प्रकृति	समरूप	विशिष्ट बिना किसी स्थानापन्न के	विभेदीकरण	समरूप, अधिक विभेदिक
प्रवेश का प्रकार	स्वतंत्र	बंद	स्वतंत्र	निषिद्ध
मूल्य पर पकड़	कोई पकड़ नहीं मूल्य स्वीकारक	पूर्णतया अन्तः मूल्य निर्धारक	कुछ	कुछ
माँग की लोच	असीमित $ed = \infty$	छोटी	बड़ी	छोटी
विज्ञापन	कुछ भी नहीं	कुछ भी नहीं	विद्यमान है।	विद्यमान है।
माँग वक्र की प्रकृति	सीधा	ऋणात्मक	ऋणात्मक	लोचदार
दीर्घकाल में	सामान्य लाभ	असामान्य लाभ	सामान्य लाभ	.....

★ **शुद्ध राष्ट्रीय आय दर–**

- वर्तमान कीमतों पर – 14.9%
- सतत् कीमतों पर – 6.6%

★ **प्रति व्यक्ति शुद्ध राष्ट्रीय आय–**

- वर्तमान कीमतों पर – 13.7%
- सतत् कीमतों पर – 5.5%

राजस्थान के सन्दर्भ में वर्तमान २०२२–२३ के आँकड़े

★ **सकल राज्य घरेलू उत्पाद–**

- वर्तमान कीमतों पर – 14.14 लाख करोड़ रु.
- स्थिर कीमतों पर – 7.99 लाख करोड़ रु.

★ **शुद्ध राज्य घरेलू उत्पाद–**

- वर्तमान कीमतों पर – 12.60 लाख करोड़ रु.
- स्थिर कीमतों पर – 6.95 लाख करोड़ रु.

★ **प्रति व्यक्ति आय–**

- वर्तमान कीमतों पर – 156149 रु.
- स्थिर कीमतों पर – 86134 रु.

★ **आर्थिक वृद्धि दर–**

- वर्तमान कीमतों पर – 16.04%
- स्थिर कीमतों पर – 8.19%

महत्वपूर्ण बिन्दु

★ जब NNP का मूल्यांकन अथवा माप साधन लागत पर किया जाता है तो उसे राष्ट्रीय आय कहा जाता है।

★ राष्ट्रीय आय की गणना एक वित्त वर्ष के लिए (1 अप्रैल – 31 मार्च) की जाती है।

★ राष्ट्रीय आय को देश की 'मुद्रा' में व्यक्त किया जाता है।

★ राष्ट्रीय आय का माप बाजार मूल्यों पर किया जाता है।

★ भारतीय राष्ट्रीय आय के आँकड़े दो मूल्यों के आधार पर जारी किये जाते हैं–

(i) चालू मूल्य / प्रचलित मूल्य पर

(ii) स्थिर मूल्य / आधार वर्ष पर (वर्तमान 2011–12)

★ राष्ट्रीय आय के लेखांकन को "**सामाजिक लेखांकन**" कहा जाता है, इसका प्रतिपादन रिचर्ड स्टोन के द्वारा किया गया।

★ राष्ट्रीय आय से सम्बंधित आँकड़े "**राष्ट्रीय लेखा सांख्यिकी**" नामक पुस्तक में प्रकाशित किये जाते हैं।

↳ **राष्ट्रीय लेखा सांख्यिकी–**

- इसे श्वेत पत्र के नाम से भी जाना जाता है।
- प्रतिपादन – ग्रेगरी किंग के द्वारा किया गया।

★ **GDP – अवस्फीतिकारक (Deflation) –**

↳ महँगाई के प्रभाव की गणना में उपयोग लिया जाता है।

↳ GDP Deflation निकालने के लिए नाममात्र की GDP अर्थात् Nominal GDP में से वास्तविक GDP का भाग देना होता है।

$$\text{GDP Deflater} = \frac{\text{Nominal GDP (नाममात्र)}}{\text{Real GDP (वास्तविक)}}$$

↳ GDP अवस्फीतिकारक व Real GDP में व्युत्क्रमानुपाती सम्बंध होता है।

विद्यार्थी ध्यान दे– 1 जनवरी, 2015 से राष्ट्रीय आय की गणना विधि में परिवर्तन किया गया। प्रत्येक क्षेत्र के अलग अलग प्रदर्शन की गणना हेतु कारक लागत पर सकल मूल्य वर्धन (G.V.A) अपनाया गया।

अध्याय
08
मुद्रा एवं बैंकिंग (Money and Banking)

मुद्रा प्रणाली

★ **मार्शल के अनुसार,** "मुद्रा वह दूरी है, जिसके चारो ओर अर्थव्यवस्था चक्कर लगाता है।"

★ मुद्रा (Money) शब्द की उत्पत्ति **लैटिन** भाषा के **'मोनेटा'** (Moneta) शब्द से हुई है।

★ मोनेटा नाम **'प्राचीन रोम की देवी'** जूनो का था। जिसे **स्वर्ग की देवी/रानी** कहा जाता था।

★ प्राचीन काल में देवी जूनों के मंदिर में ही मुद्रा का निर्माण किया जाता था।

★ राजा–महाराजाओं के द्वारा किसी भी धातु से बनी वस्तु या कागज के टुकड़े पर राजकीय मोहर लगा देने पर वह मुद्रा का कार्य करता था।

★ मुद्रा में दो गुणों का होना आवश्यक है–

(i) वैधानिकता का होना। (ii) सर्वग्राहिता का होना।

★ **सैलिगमैन के अनुसार,** "मुद्रा वह वस्तु है, जिसे सामान्य स्वीकृति प्राप्त हो।"

★ **नेप के अनुसार,** "कोई भी वस्तु जो राज्य द्वारा मुद्रा घोषित कर दी जाती है, मुद्रा कही जाती है।"

★ **रॉबर्टसन के अनुसार,** "ऐसी कोई भी वस्तु जो बड़े पैमाने पर वस्तुओं के व्यवसायिक दायित्वों के भुगतान के **रूप** में स्वीकार की जाती है, मुद्रा कहलायेगी।"

★ **प्रो. मार्शल के अनुसार,** "मुद्रा में वे सभी वस्तुएँ शामिल की जाती हैं जो किसी विशेष समय अथवा स्थान में बिना संदेह या विशेष जाँच–पड़ताल की वस्तुओं एवं सेवाओं को खरीदने तथा व्यय के भुगतान के साधन के **रूप** में सामान्यतया स्वीकार की जाती हैं।"

★ **किनले के अनुसार,** "मुद्रा एक ऐसी वस्तु है जिसे सामान्यतया विनिमय के माध्यम अथवा मूल्य के मान के **रूप** में स्वीकार एवं प्रयोग किया जाता है।"

★ **प्रो. कैंट के अनुसार,** "मुद्रा एक ऐसी चीज है जिसे आमतौर पर विनिमय के माध्यम से या मूल्य के मानक के **रूप** में स्वीकार किया जाता है।"

SIKHWAL PUBLICATION

5. **बैंक दर (BR)**– वह दर जिस पर व्यापारिक बैंकों के द्वारा दीर्घकालीन अवधि के लिए ऋण की सुविधा RBI से ली जाती है, इसलिए इसे दीर्घकालीन ब्याज दर भी कहते हैं।

विद्यार्थी ध्यान दे– व्यापारिक बैंकों के विनिमय बिल की पुनः कटौती की सुविधा Bank Rate पर उपलब्ध करवाई जाती है।

★ **विनिमय बिल**– विक्रेता के द्वारा सशर्त लिखा गया बिल होता है, जिसमें माल का विवरण, भुगतान अवधि होती है। क्रेता के द्वारा हस्ताक्षर करने पर यह विनिमय बिल बन जाता है।

- बैंक दर को पुनः कटौती दर भी कहा जाता है।
- बैंक दर का उपयोग RBI के द्वारा व्यापारिक बैंकों पर किसी भी प्रावधान का पालन न करने पर जुर्माना दर के रूप में काम लिया जाता है।
- Bank Rate + २ से 5% – जुर्माना
- वर्तमान में बैंक दर = 6.75%

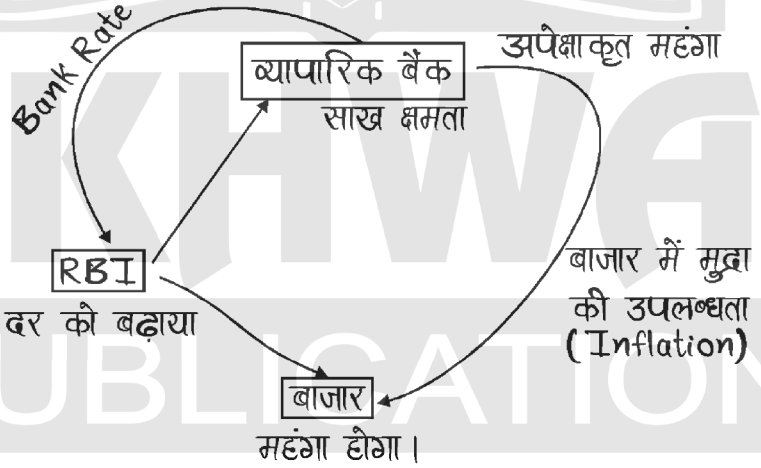

- RBI के द्वारा व्यापारिक बैंकों को दिये जाने वाले ऋण की दर को बढ़ाने पर ऋण महंगा किया जाता है, जिससे व्यापारिक बैंकों की साख क्षमता कम हो जाती है और बाजार में मुद्रा की उपलब्धता को कम किया जाता है।
- Bank दर को बढ़ाना → मुद्रा स्फीति को नियंत्रण
- Bank दर को घटाना → मुद्रा संकुचन को नियंत्रण

अध्याय 12

मानव विकास सूचकांक (Human Development Index)

★ अलग–अलग देशों के विकास के स्तर की गणना करने हेतु मानव विकास सूचकांक जारी किया जाता है।

★ मानव विकास सूचकांक (HDI) के जनक – **महबूब उल हक** (पाकिस्तान)

★ अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर HDI – "**संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम**" (UNDP) द्वारा जारी किया जाता है।

★ <u>UNDP (Union Development Programme)</u>–

↳ स्थापना – 1965

↳ मुख्यालय – न्यूयार्क

★ भारत में HDI की सिफारिश अर्थशास्त्री **अमर्त्य सेन** ने की थी।

★ भारत में HDI "योजना आयोग" (वर्तमान नाम–नीति आयोग) द्वारा जारी किया जाता है।

★ वर्ष २०२२ में HDI में विश्व के 191 देशों में से भारत का स्थान **132वाँ** रहा।

★ पहली बार HDI रिपोर्ट 1990 में जारी की गई।

★ भारत ने अपना स्वयं का HDI-2001 में जारी करना शुरू किया था।

★ राजस्थान ने अपना खुद का HDI-2002 में जारी किया था।

★ भारत का ऐसा राज्य जिसने सबसे पहले अपना अलग से HDI जारी किया – मध्यप्रदेश

★ <u>HDI जारी करने के आधार</u> –

1. जीवन प्रत्याशा/स्वास्थ्य/दीर्घायु
2. ज्ञान/शिक्षा का स्तर
3. प्रति व्यक्ति आय/रहन–सहन का स्तर
4. तकनीकी विकास एवं प्रगति

SIKHWAL PUBLICATION

अध्याय

13 लोक वित्त (Public Finance)

★ लोक वित्त का सम्बंध केन्द्र, राज्य तथा स्थानीय सभी प्रकार के आय–व्यय से होता है।

★ सर्वप्रथम लोक वित्त को सार्वजनिक आय–व्यय के प्रबंध के रूप में प्रयोग करने का श्रेय–फ्रांस को जाता है।

★ यह सरकार के आय–व्यय का अध्ययन करने का काम करती है।

★ इसके द्वारा राज्य द्वारा अर्जित आय तथा सार्वजनिक अधिकारियों द्वारा किए गए व्यय का लेखा–जोखा प्रस्तुत किया जाता है।

★ **प्रो. फिण्डले सिराज के अनुसार,** "लोक वित्त सरकारी अधिकारियों द्वारा एकत्रित की जाने वाली आय तथा उसके व्यय में निहित सिद्धान्तों का अध्ययन है।"

★ **प्रो. डॉल्टन के अनुसार,** "सार्वजनिक वित्त ऐसा विषय है, जो सार्वजनिक अधिकारियों के आपसी सहयोग से किए गए आय–व्यय का अध्ययन करता है।"

★ **प्रो. सी.एफ. बैस्टेल के अनुसार,** "लोक वित्त राज्य की लोक सत्ताओं के आय–व्यय एवं उनके मध्य पारस्परिक सम्बंध, वित्तीय प्रशासन एवं नियंत्रण का अध्ययन करता है।

★ **प्रो. टेलर के अनुसार,** "सरकारी संस्था के अन्तर्गत संगठित रूप से जनता के वित्त का व्यवहार ही राजस्व है, इसमें केवल सरकारी वित्त का ही अध्ययन किया जाता है।"

★ **लोक वित्त का क्षेत्र–**

1. सरकारी आय
2. सरकारी व्यय
3. वित्तीय प्रशासन
4. राजकोषीय या वित्तीय नीति
5. सार्वजनिक ऋण
6. आर्थिक स्थिति

विद्यार्थी ध्यान दे–लोक वित्त कला एवं विज्ञान दोनों है। यह एक वास्तविक व आदर्शात्मक विज्ञान भी है।

SIKHWAL PUBLICATION

★ **लोक वित्त का महत्व–**

↳ **प्रो. लार्नर के अनुसार,** " इसके द्वारा अर्थव्यवस्था में क्रियात्मक परिवर्तन लाए जा सकते हैं। जिससे इसका महत्व बढ़ता जा रहा है।"

1. रोजगार की प्राप्ति
२. **राष्ट्रीय आय में वृद्धि–** लोक वित्त की नीतियों के माध्यम से राष्ट्रीय आय में वृद्धि की जा सकती है।
3. **पूँजी निर्माण में वृद्धि–** सरकार करों में अनेक प्रकार की छूट प्रदान करके पूँजी विनियोग को प्रोत्साहन देती है, जिससे पूँजी निर्माण में वृद्धि होती है।
4. **मुद्रा और साख का बढ़ता उपयोग–** सरकार को लोक वित्त से सम्बंधित अनेक कार्य करने पड़ते हैं, जिसमें सरकार को अतिरिक्त धन की आवश्यकता होती है, इससे साख की मात्रा में वृद्धि होती है।
5. **आर्थिक विषमताओं में कमी लाना–** लोक वित्त के द्वारा आय तथा सम्पत्ति की विषमता को कम किया जा सकता है।
6. **सामाजिक कल्याणकारी दायित्वों का निर्वाह–** लोक वित्त के सिद्धान्तों की सहायता से विभिन्न वित्तीय स्त्रोतों से धन जुटाकर कल्याणकारी योजनाओं को पूरा कर सकते हैं।
7. **मूल्यों में स्थिरता–** प्रशुल्क नीतियों में परिवर्तन करके मुद्रा प्रसार व मूल्य स्तर के उच्चावचनों को रोका जा सकता है।
8. **आर्थिक स्वामित्व–** राष्ट्रीय हित में किए जाने वाले कार्य के लिए लोक वित्त का महत्व बढ़ जाता है।
9. उद्योगों को संरक्षण प्रदान करना
10. राष्ट्रीय उपक्रमों का विकास करने में

★ **लोक वित्त के उद्देश्य–**

1. अधिकतम सामाजिक लाभ प्राप्त करना।
२. शिक्षा के क्षेत्र में बढ़ावा देना।

अध्याय

15

राजस्थान में मुख्य उद्योग व औद्योगिक विकास

★ औद्योगिक दृष्टि से राजस्थान की गणना पिछड़े राज्यों में की जाती है।

↳ **कारण**– (*i*) आर्थिक कारण (*ii*) राजनैतिक कारण

★ राजस्थान के पुर्नगठन के समय (एकीकरण के समय) 11 बड़े उद्योग थे जिनमें 7 सूती वस्त्र उद्योग + २ सीमेंट उद्योग + २ चीनी उद्योग थे।

★ २07 पंजीकृत फैक्ट्रीया थीं।

★ औद्योगिक क्षेत्र अर्थव्यवस्था का द्वितीयक क्षेत्र है।

★ औद्योगिक विकास तथा आधारभूत ढाँचे का विकास एक–दूसरे का पूरक है।

★ समृद्ध औद्योगिक क्षेत्र राज्य में निवेश, निर्यात एवं नवाचार को बढ़ावा देता है।

★ औद्योगिक क्षेत्र कृषि के मशीनीकरण में भी सहायक है।

★ प्रचलित कीमतों पर औद्योगिक क्षेत्र का GSVA २021-२२ में 3.11 L.C.R. था जो २0२२–२3 में बढ़कर 3.58 L.C.R. हो गया।

↳ वृद्धि दर 15.0२ प्रतिशत (२0२२–२3)

★ स्थिर कीमतों पर औद्योगिक क्षेत्र का GSVA २021-२२ में 1.91 L.C.R. था जो २0२२–२3 में बढ़कर २.03 L.C.R. हो गया।

↳ वृद्धि दर 6.3२ प्रतिशत (२0२२–२3)

विद्यार्थी ध्यान दे–राजस्थान सरकार ने 19 अगस्त, २021 को 'उद्योग विभाग' का नाम बदलकर 'उद्योग व वाणिज्य विभाग' कर दिया।

★ **राज्य में औद्योगिक पिछड़ेपन के कारण**–

(1) पानी की कमी। (२) ऊर्जा के साधनों की कमी।
(3) सीमित पूंजी का निवेश होना। (4) राजनीतिक हस्तक्षेप।
(5) कच्चे माल की सीमित मात्रा होना। (6) प्रशिक्षित श्रमिकों की कमी।
(7) परिवहन साधनों की कमी। (8) ढ़ाँचागत सुविधाओं की कमी।

↳ राष्ट्रीय कामधेनू विश्वविद्यालय – पथमेड़ा (सांचौर)

↳ गाय के मूत्र से फिनाइल बनाने का कार्य – हिंगोनिया गौशाला (जयपुर ग्रामीण)

भैंस वंश

★ भैंस प्रजनन केन्द्र – वल्लभनगर (उदयपुर)

↳ महाराणा प्रताप कृषि विश्वविद्यालय (उदयपुर) द्वारा संचालित किया गया।

★ भैंसों की दृष्टि से राजस्थान का स्थान – दूसरा (प्रथम – उत्तर प्रदेश)

★ २०वीं पशुगणना के अनुसार (२०19) राजस्थान में भैंसों की कुल संख्या 13.7 मिलियन है।

★ पिछली पशुगणना (19वीं) की तुलना में अब 5.53% की वृद्धि हुई है।

Note : 19वीं पशुगणना में कुल संख्या – 13 मिलियन।

★ राजस्थान में सर्वाधिक भैंसे – जयपुर, अलवर व भरतपुर में पायी जाती हैं।

★ राजस्थान में न्यूनतम भैंसे – जैसलमेर व प्रतापगढ़ में पायी जाती हैं।

★ केन्द्रीय भैंस अनुसंधान संस्थान – हिसार (हरियाणा)

★ भैंस की गर्भावधि – 310 दिन

★ रोग – ठप्पा कहलाता है।

प्रमुख नस्लें

1. <u>मुर्रा नस्ल–</u>

↳ क्षेत्र – श्रीगंगानगर, अलवर, कोटपुतली–बहरोड़, खैरथल–तिजारा, भरतपुर, डीग, उदयपुर व जयपुर ग्रामीण।

↳ मुख्य स्थान – भोंटगुरी (पाकिस्तान)

↳ राजस्थान में सर्वाधिक – जयपुर ग्रामीण, गंगानगर, अलवर, भरतपुर, उदयपुर

↳ राजस्थान में न्यूनतम – जैसलमेर

↳ इस नस्ल की भैंसों को "खूंडी भैंस" भी कहते हैं।

↳ भैंसों की सर्वश्रेष्ठ नस्ल है।

- इसके तहत् 'डेरा अश्व' नाम की एग्रो टूरिज्म यूनिट का संचालन किया जा रहा है। यहाँ पर स्थानीय मारवाड़ी नस्लों के घोड़ों का संरक्षण व संवर्द्धन किया जा रहा है। यहाँ पर पर्यटकों को "शोकिया हॉर्स राइडिंग" के साथ हेरिटेज खेल पोलो भी खिलाया जायेगा।

★ पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए – जयपुर, अजमेर, सीकर, चित्तौड़गढ़, सवाई माधोपुर, करौली, माउंट आबू, भीलवाड़ा, झालावाड़ जिलों में स्थित धार्मिक तीर्थों का "सर्वधर्म समभाव" सर्किट विकसित किया गया है। (बजट २०२२-२३ के अनुसार)

- हिन्दू, मुस्लिम, जैन व सिख धर्म शामिल।
- बजट राशि – ४९.३३ करोड़ रुपये स्वीकृत।

★ **राजस्थान पर्यटन विभाग को मिले अवार्ड–**

- इंडिया इंटरनेशनल ट्रेवल मार्ट (IITM) बेंगलुरु में कल्चरल डेस्टिनेशन ऑफ द ईयर अवार्ड।
- इंडिया इन्टरनेशनल ट्रेवल मार्ट (IITM) चेन्नई में बेस्ट डेकोरेटेड स्टैंड का नेशनल अवार्ड।
- आउटलुक ट्रेवलर द्वारा कुम्भलगढ़ व चित्तौड़गढ़ किले को हेरिटेज डेस्टिनेशन इन इंडिया का सिल्वर अवार्ड।
- ट्रेवल एंड टूरिज्म फेयर (TTF) अहमदाबाद में बेस्ट डिजाईन एंड डेंकोरेशन अवार्ड।
- TTF एंड ओटीएम, मुम्बई में बेस्ट डिजाईन एवं डेकोरेशन अवार्ड।
- कोन्डेनास्ट रीडर्स ट्रेवल अवार्ड में फेवरेट लीजर डेस्टिनेशन इन इंडिया अवार्ड।
- कोन्डेनास्ट रीडर्स ट्रेवल अवार्ड में फेवरेट इंडियन स्टेट फॉर रोड़ ट्रिप्स अवार्ड।
- रीडर्स चॉइस ट्रेवल प्लस लीजर इंडियाज बेस्ट अवार्ड में डोमेस्टिक डेस्टिनेशन श्रेणी में बेस्ट स्टेट अवार्ड।
- इंडिया इंटरनेशनल ट्रेवल मार्ट (IITM) हैदराबाद में डेस्टिनेशन मार्केटिंग केंपेन अवार्ड।

11. **दशहरा महोत्सव** – आश्विन शुक्ल दशमी को कोटा में लगता है।
12. **हाड़ौती महोत्सव(कोटा)**
13. **बैणेश्वर महोत्सव** – माघ पूर्णिमा को डूँगरपुर में लगता है।
14. **माही महोत्सव(बांसवाड़ा)** – पहली बार फरवरी 2008 में आयोजित किया गया।
15. **मीरा महोत्सव**– शरद पूर्णिमा को चित्तौड़गढ में लगता है।
16. **चन्द्रभागा महोत्सव(झालावाड़)**
17. **शरद महोत्सव व ग्रीष्म महोत्सव(माउण्ट आबू,सिरोही)**
18. **थार महोत्सव व बैलून महोत्सव (बाड़मेर)**
19. **ऊँट महोत्सव (बीकानेर)**
20. **किन्नु महोत्सव(गंगानगर)**

महत्वपूर्ण तथ्य

- ★ देश में पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए पर्यटन मंत्रालय ने वित्त वर्ष 2014 में 'प्रसाद अभियान' की शुरूआत की गई, जिसके अन्तर्गत शुरूआत में अजमेंर सहित देश के 12 नगरों को शामिल किया गया है।
- ★ राजस्थान का पहला हेरिटेज होटल – अजीत भवन (जोधपुर)
- ★ राजस्थान का पहला हेरिटेज तीर्थ स्थल – पुष्कर (अजमेर)
- ★ राजस्थान का पहला हेरिटेज नगर – ब्रजनगर (झालावाड़)
- ★ मूमल (जैसलमेर) ,खादिम (अजमेर), ढोला–मारू (बीकानेर), तथा RTDC होटल कजरी, उदयपुर में स्थित है।
- ★ 19 जून 2019 को राजस्थान के वरिष्ठ नागरिकों को हवाई मार्ग से निःशुल्क तीर्थयात्रा की शुरूआत की गई।
- ★ गणगौर महोत्सव – चैत्र कृष्ण प्रतिपदा से चैत्र शुक्ल तृतीय तक आयोजित होता है।
- ★ तीज महोत्सव – श्रावण शुक्ल तृतीय को आयोजित होता है।
- ★ R.T.D.C. होटल गणगौर – जयपुर